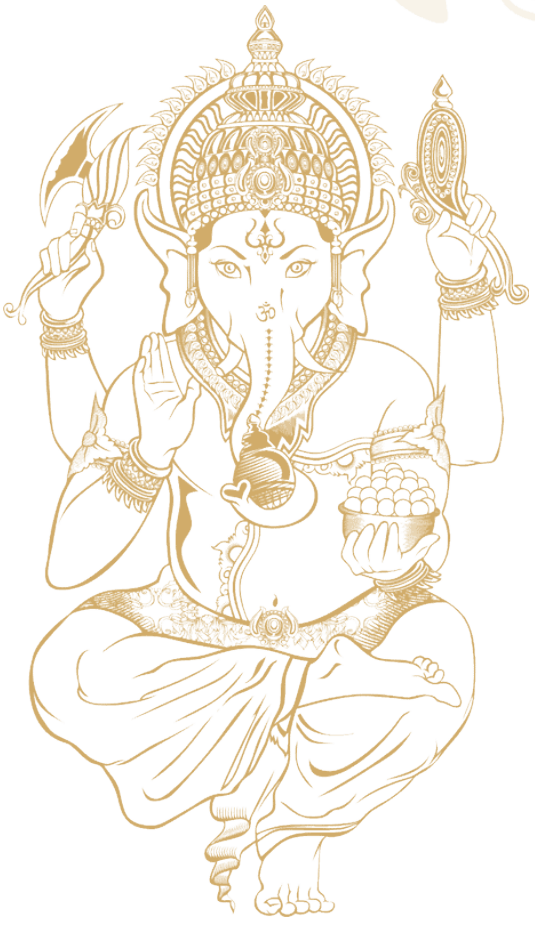

Miss Chari

19 Dec 2025

03:36 PM

Simla

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120619401**

तिथि 19/12/2025 **समय** 15:36:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Simla **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:16
अक्षांश 31:06:00 उत्तर **रेखांश** 77:10:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	21:07:43 घं
वेलान्तर	00:02:54 घं
सूर्योदय	07:14:48 घं
सूर्यास्त	17:22:21 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	15
नक्षत्र	ज्येष्ठा
योग	शूल
करण	चतुष्पाद

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मृग
नाड़ी	आद्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	यी-यीशू
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

बुध 4वर्ष 7मा 15दि

बुध

19/12/2025
04/08/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	19/12/2025
गुरु	25/11/2027
शनि	04/08/2030

योगिनी

भद्रिका 1वर्ष 4मा 9दि

भद्रिका

19/12/2025
30/04/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	19/12/2025
मंगला	28/01/2026
पिंगला	10/05/2026
धान्या	09/10/2026
भ्रामरी	30/04/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:53:26	वृष	कृतिका	4	सूर्य	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			03:31:55	धनु	मूल	2	केतु	सूर्य	मित्र राशि	1.15	ज्ञाति	पितृ	सम्पत
चंद्र			26:22:23	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	गुरु	नीच राशि	1.31	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	08:52:55	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	1.16	पुत्र	भ्रातृ	सम्पत
बुध			15:48:13	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	गुरु	सम राशि	1.18	मातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		28:40:33	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.14	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र		अ	29:09:10	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	सम राशि	1.10	आत्मा	कलत्र	जन्म
शनि			01:20:25	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.08	कलत्र	आयु	मित्र
राहु	व		17:52:08	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	मित्र राशि		---	ज्ञान	वध
केतु	व		17:52:08	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

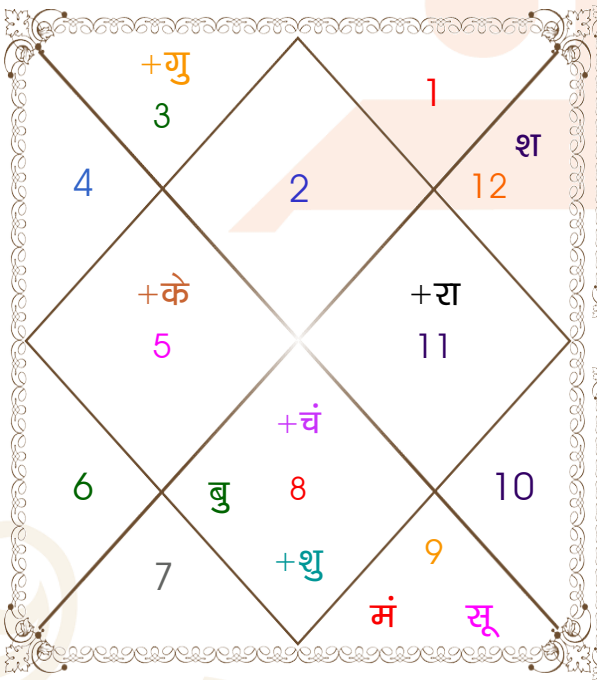

चन्द्र कुंडली

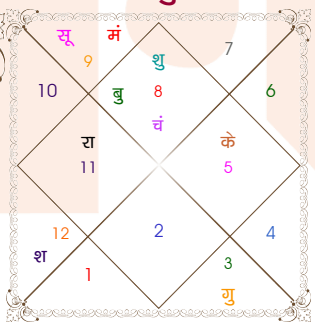

नवमांश कुंडली

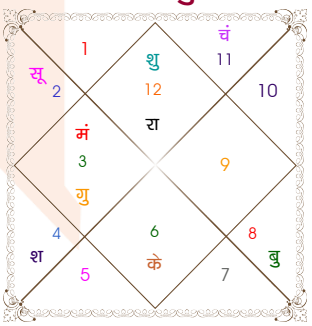

सर्वाष्टकवर्ग

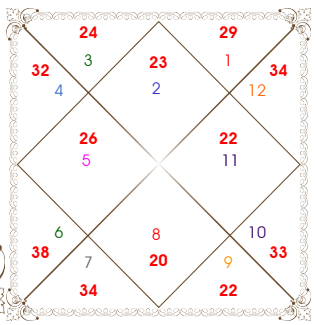

दशमांश कुंडली

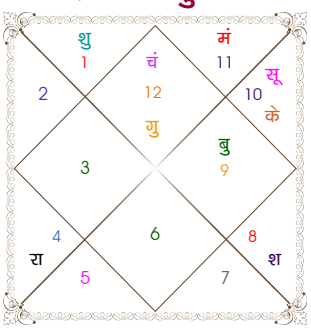

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशिस्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण राक्षस, योनि मृग, नाड़ी आद्य तथा वर्ग मृग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "यि" या "यी" से प्रारम्भ होगा।

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। इस नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण जातक की माता को अरिष्ट होता है। अतः जन्म समय में ही शास्त्रीय विधि से इस नक्षत्र की शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न कराने चाहिए। 27 दिन बाद पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का विधिपूर्वक हवन करना चाहिए। इस प्रकार करने से नक्षत्र का दोष प्रभावहीन हो जाएगा तथा सम्बन्धित जातक को कोई कष्ट नहीं होगा।

मंत्र- ऊं मातेव पुत्रं पृथ्वीं पुरीष्यमग्निं स्वेवोनावभारूयतां।
विस्वैर्दिवैर्ऋतुभिः सविद्वानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुत्रचतु।।
जातकाभरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

समाज में आपकी ख्याति हमेशा व्याप्त रहेगी तथा सभी लोग आपको सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता दर्शनीय रहेगी जिससे आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा। विविध प्रकार के धन वैभव से युक्त रहकर आप एक सामर्थ्यशाली पुरूष रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करने में सक्षम होंगे। समाज में अपने प्रभाव को स्थापित करने में भी आप सफल होंगे तथा सभी लोग आपके प्रताप को हृदय से स्वीकार करेंगे। आप में नेतृत्व तथा वक्तृत्व दोनों शक्तियां विद्यमान रहेगी। अतः आप एक श्रेष्ठ तथा लोकमान्य नेता के रूप में अपना स्थान भी स्थापित कर सकेंगे।

सत्कीर्तिकान्ति विभुतासमेतो वितान्वितोत्यन्तलसन्प्रतापः।
श्रेष्ठः प्रतिष्ठो वदतां वरिष्ठो ज्येष्ठोत्पन्नः स्यात्पुरूषोविशेषात्।।
जातका भरणम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक उत्तम कोटि के यश ओर प्रभुता से युत, धनी, सत्प्रतापी, नेता, लोकमान्य तथा उत्तम वक्ता होता है।

आपका स्वभाव उग्रता से युक्त रहेगा तथा इसी क्रोधी स्वभाव के कारण यदा कदा आप को मानसिक तथा आर्थिक परेशानियां उत्पन्न होंगी। समाज में अन्य महिलाओं से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध भी स्थापित रहेंगे। साथ ही धर्म एवं ईश्वर के प्रति आपके मन में पूर्ण

श्रद्धा एवं भक्ति का भाव विद्यमान रहेगा एवं इसके अनुपालन में भी आजीवन यत्नशील रहेंगे।

ज्येष्ठायामतिकोपवान परवधूसक्तो विभुधार्मिकः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र का जातक अत्याधिक कोधी, अन्य स्त्रियों में आसक्त, सामर्थ्यवान तथा धार्मिक होता है।

आपके समाज में बहुत से लोगों से मित्रता रहेगी तथा मित्र मंडली में आप प्रमुख एवं आदरणीय समझे जाएंगे। आपका स्वभाव सन्तोषी रहेगा तथा जो कुछ भी यथा शक्ति उपलब्ध हो उसी पर सन्तोष करके अपना जीवन पालन करेंगे। लेकिन धर्मानुपालन करते हुए भी आप की उग्रता में किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं आएगी।

ज्येष्ठासु बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मकृत्प्रचुरकोधः।
बृहज्जातकम्

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बहुत मित्रों वाला, सन्तोषी, धर्माचरणकर्ता तथा कोधी होता है।

आप प्रारम्भ से ही लेखन कार्य में रूचिशील तथा परिश्रमशील रहेंगे तथा कविता सृजन में आपको सफलता प्राप्त हो सकेगी। आप की प्रवृति भी सहनशील होगी एवं सुख दुःख को समान रूप से समझने की आप में दक्षता रहेगी। आप अत्यन्त चतुर एवं चालाक व्यक्ति होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को अपनी इसी प्रवृति से सम्पन्न करेंगे। आप निम्न श्रेणी के लोगों के द्वारा हमेशा पूज्य एवं श्रद्धेय रहेंगे। ये लोग आपको हृदय से आदर प्रदान करेंगे।

बहुमित्र प्रधानश्च कविर्दान्तो विचक्षणः।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्र पूजितः।।
मानसागरी

अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अधिकांश मित्रों के कारण स्वयं प्रधान, काव्यकर्ता, सहनशील, परम चतुर, धर्म में रत एवं शूद्रों द्वारा पूजित होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ हैं। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

वृश्चिक राशि में जन्म होने के कारण आपकी आखें सुन्दर तथा बड़ी बड़ी होगी एवं

सीना भी विस्तृत रहेगा। साथ ही शारीरिक वर्ण में अल्प मात्रा में श्यामलता का समावेश रहेगा। आप के हाथ या पैर में मछली का भी चिन्ह अंकित हो सकता है। यदा कदा समस्त हस्त रेखाएं वज्र या पक्षी के आकार की होगी। आप अपने पिता तथा गुरूजनों से स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति करेंगे। बचपन में आप काफी समय तक रोग ग्रस्त भी रहेंगे। आप एक तीव्र बुद्धि के पुरूष रहेंगे। अतः अपने परिश्रम तथा योग्यता से सरकार में कोई उच्चाधिकार प्राप्त पद को सुशोभित करने में भी सफल हो सकेंगे। आपके कार्य कठोर तथा कूरतापूर्ण होंगे अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों में अपना कार्यक्षेत्र बना सकेंगे। कभी कभी आपके स्वभाव में दुष्टता का भाव उत्पन्न होगा जिससे अन्य जन आपसे कष्टानुभूति करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर एवं मस्तक भी आकार में विस्तृतता से युक्त रहेगा। तथा अन्य जनों की सुन्दर वस्तुओं को देखकर लोलुपता की भावना का प्रदर्शन करेंगे। आपके शरीर में कोमलता या लावण्यता भी विधमान रहेगी। ईश्वर एवं धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा। आप की दाढ़ी एवं नाखून भी आघात युक्त रहेंगे। धन वैभव से आप युक्त रहेंगे। आप किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा कार्य करने में दक्षता प्राप्त करेंगे। अपने बन्धु वर्ग से आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। समाज में आप पराक्रमी पुरूष होंगे तथा अधिकांश लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आप के स्वभाव में क्रोध की भी प्रवलता रहेगी। समाज में अन्य जनों से भी आपके निजी तौर से मधुर संबंध रहेंगे। इसके साथ ही मुकददमें या किसी अन्य कारण से आप सरकार द्वारा धनहानि प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा परिवार के अतिरिक्त अन्य बहुत से जनों को आपके द्वारा सुख की प्राप्ति होगी। स्त्रियों के विषय में आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली सिद्ध होंगे। इनसे आपको पूर्ण मान सम्मान तथा लाभ होगा। आप सरकारी सेवा में भी नियुक्त हो सकेंगे। आप के मन में हमेशा अन्य जनों के धन को प्राप्त करने की इच्छा व्याप्त रहेगी तथा आजीवन इसके लिए आप प्रयत्नशील भी रहेंगे। साथ ही आपकी मति दृढता से युक्त होगी तथा आपके सभी कार्य दृढसंकल्प इच्छा से पूर्ण होंगे। साथ ही आप एक साहसी एवं निर्भय प्रवृति के भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त चुगलखोरी की प्रवृति भी यदा कदा आपमें दिखाई देगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।

पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप अपने जीवन काल में यदा कदा जुआ आदि खेलने में प्रवृत होंगे परन्तु इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। विवादादि में भी आपकी रूचि रहेगी तथा किसी न किसी से आपका झगडा या विवाद होता रहेगा। आप अपने हृदय से कमजोरी महसूस करेंगे। तथा जीवन में शान्ति आपको बहुत ही कम प्राप्त होगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

बाल्यकाल से ही आप अपने घर से बाहर दूसरी जगह निवास करेंगे तथा घूमने फिरने के भी आप शौकीन होंगे। आपकी प्रवृति भी अभिमानी होगी तथा समय समय पर अन्य जनों के समक्ष अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन आप करते रहेंगे। स्वजनों के प्रति भी आपके मन में स्नेह का भाव भी रहेगा तथा अपनी साहसी प्रवृति से धनार्जन आदि करने में आप पूर्ण रूप से सफल रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने की रहेगी। आपका मन भी कठोर रहेगा तथा दया एवं करूणा के भाव का इसमें प्रायः न्यूता रहेंगी। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी प्रवृति उग्र रहेगी तथा शीघ्र एवं अकारण ही उत्तेजित एवं क्रोधित होना आपके लिए सामान्य बात होगी। साथ ही तथा अन्य जनों से आपका परस्पर विवाद होता रहेगा। आप शरीर से बलवान रहेंगे परन्तु अधिकांश लोगों का आपके प्रति वैमनस्य का भाव रहेगा।

आप अपने जीवन काल में उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल रह सकते हैं। आपका शारीरिक स्वरूप भी विशेष सुन्दर नहीं होगा परन्तु आपकी वाणी कटु जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः अपने वार्तालाप मे आप मधुर शब्दो का प्रयोग करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी कोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मृग योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय होगी तथा प्रत्येक कार्य को स्वच्छन्दता पूर्वक बिना किसी हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगे। आपकी प्रवृति शान्त होगी तथा उपद्रवादि करने में आपकी बुद्धि नहीं रहेगी। आपके आजीविका के साधन भी अच्छे कार्यों से सम्बन्धित रहेंगे। सत्य एवं धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी एवं जीवन में इसका पालन करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। अपने स्वजनों के प्रति आपका हार्दिक स्नेह तथा लगाव रहेगा एवं इनके आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी प्रवृति साहसी तथा शूरवीरता से युक्त रहेगी वाद विवादों में आप प्रायः विजय ही प्राप्त करेंगे।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर

से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए अश्विन मास, षष्ठी, प्रतिपदा, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपातयोग, गरकरण, शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करे अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी विशेष सतर्क रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता अथवा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नहीं हो रहे हो तो आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, चन्दन, गेहूं, मल्का आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए एवं सोमवार के उपवास भी रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न कराने चाहिए। ऐसा करने से आपको पूर्ण रूपेण मानसिक शान्ति प्राप्त होगी एवं अन्य समस्त अशुभ फलो का प्रभाव नष्ट होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।

PANDIT DEVPRAKASH SHARMA
VPO CHEOG, SHIMLA HIMACHAL PRADESH 171209
9459311375
devprakash776@gmail.com